

گیت نواز

हिक्मते नमाम

★ अम ★

हजरत मौलाना मुहम्मद शाकिर
रजवी नूरी-मुंजि
(अमीरे सुन्नी दा'वते इस्लामी)

★ प्रकाशक ★

सुन्नी दा'वते इस्लामी
(दयादरा शाखा)
C/o. इयूजाने रजा मंजिल, मु.पो. दयादरा
ता. जि. ભરૂચ. પિન : ૩૯૨૦૨૦.
ફોન : (૦૨૬૪૨) ૨૮૨૯૧૧, ૨૮૨૭૯૨.
મો. ૯૮૨૪૪૮૬૪૪૩

★ प्रकाशन : ★ आवृत्ति-०१
★ ०१-रमजान ★ हि.स. १४२५
★ ओक्टोबर-२००४ ★ प्रत : १०००

किंमत : રૂ. ૫/- (ટપાલ ખર્ચ રૂ. ૧/-)

જુલાની આઈ, દયાદરા કોળ : (૦૨૬૪૨)
૨૮૨૭૯૨, ૨૮૨૯૧૧ મો. ૯૮૨૪૪૮૬૪૪૩

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

الحمد لله رب العالمين، والعاقبة للمتقين، والصلوة والسلام على سيد

الانبياء والمرسلين وعلى اله واصحابه الطيبين الطاهرين اما بعد

فَاعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرٰی (سوره طه آیت ۱۴) صدق الله العظيم

काबिले कहर उल्माअे जवील अेडतेराम व डाजेरीने सुन्ती एजतेमा ! अस्सलामु अलैकुम वरड्मतुल्वाडि व भरकातुड्.

मेरे प्यारे आका صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो ! जिस आयते करीमा की तिलावत का मैंने शर्क डालसिल किया उसके मुतादिलक कुछ मा'रुजात पेश करनेसे पडले आँखे डम और आप मिलकर अपने और सारी काँनात के मर्कजे अकीदत डुजूर रडमते आलम नूरे मुजस्सम इन्ध्रे हो आदम व बनी आदम صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم की बारगाडे बे कस पनाडमें जिस तरीकेसे मैं पण्डाँ उसी तरीके से बआवाजे भुलंद हुर्रहो सलामका नजराना पेश करे.

الصلوة والسلام عليك يا رسول الله الصلوة والسلام عليك يا حبيب الله

الصلوة والسلام عليك يا نبي الله الصلوة والسلام عليك يا نور الله

وعلى آلك واصحابك يا حبيب الله صلى الله تعالى عليك وسلم

मेरे प्यारे आका صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो ! जिस आयते करीमा की तिलावतका मैंने शर्क डालसिल किया है उसके

सिलसिलामें रब्बे कहीर मुजे उक्क कडने और आप सबको उक्क सुननेकी तौफीक अता इर्माअे. परवर हिंगार जल्ल जलालुड् कुर्आने मुकदस में एर्शाह इर्माता है : "اقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرٰی : मेरी याद के लिअे नमाज काँम रअ." - (क-जुल एमान)

रब्बे कहीर यूँडी इर्मा देता के नमाज काँम करो, लेकिन ! यड ताकीद इर्माँ : "اقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرٰی" नमाज काँम करो मेरी याद के लिअे. कभी आपने उसके बारेमें सोयनेकी कोशिश की ?

यूँ डी यारो मस्लक के अंदर, यारो एमाम के नजदीक आप देणें के नमाज का आगाज डोता है क्यामसे. अय मेरे परवरहिंगार ! तू वुजूका तरीका तो भता रडा है :-

يا ايها الذين آمنوا اذا قمتم الى الصلوة فاغسلوا

وجوهكم وايديكم الى المرافق، وامسحوا

ابرؤسكم وارجلكم الى الكعبين (ع, अलमाँहदा)

तर्जुमा : अय एमानवालो ! जब नमाज को भणे डोना याडो तो अपने मुँड धोओ और कोडनियों तक डथ और सरों का मसड करो और घड्डों तक पाँ डोओ. - (क-जुल एमान)

लेकिन ! नमाज के सिलसिलेमें तो इर्मा रडा है : "नमाज काँम करो मेरी याद के लिअे !" अय मेरे परवरहिंगार डमें वो तरीकाअे नमाज भी तो भता दे ! पूरा कुर्आन जिसके अंदर सारी यीजों का जिक मिलता है. कहीं य्यूँटियों का जिक मिल रडा है, कहीं नमाज का डुकम मिल रडा है. मगर मा'बूह नमाज का डुकम तो मिल रडा है, तरीकअे नमाज नडी मिलता ! तो मौला तआला एर्शाह इर्माता है :-

★ हिक्मतो नमाज ★

وما تأکم الرسول فخذوه وما نهکم عنه فاتتهوا

तर्जुमा : और जो कुछ तुम्हें रसूल अता इर्माअें वो लो और जिससे मना इर्माअें भाज रडो. —(क-जुल इमान)

जो रसूल हें उसे ले लो. या'नी नमाज का हुकम में ने दिया अब अगर मैं नमाज की तइसीर ली बता देता तो मडभूब के दर पर तुम कैसे जाते ? नमाज काईम करनेका उसूल उनसे कैसे लासिल करते ? ईस लिअे मैं ने नमाजका हुकम देकर मडभूबका दरबार बता दिया के सजदा वही कभूल डोगा जो अदाअे मुस्तफा के साथ डो.

अब आप देभें, नमाज का आगाज डोता है कयाम से. जब मैं ने ईस अंदाज के बारेमें बैठे बैठे गौर किया के नमाज का आगाज सजदेसे कयूं नही डो रडा है ? रुकूअ से कयूं नही डो रडा है ? नमाज का आगाज कयामसे कयूं डो रडा है ?

तो यड बात सडीड है ! उलमा की मौजूदगीमें परवरदिगार की तरइसे इल्म की बरकतें मिल जाती हैं. बात आलिम की आई है तो अर्ज करूं. आप देभें, इर्माया गया : आलिम के लिअे समंदर की मछलियां हुआअें करती हैं. मैं ने सोया के आभिर सरकारने समंदर की मछलियोंसे कयूं तशबीड (सरभामशी) इर्माई के आलिम के लिअे समंदर की मछलियां हुआ करती हैं ? तो सुनों ! मछलियां बगैर पानी के ज नही सकती और पानी अगर बरसता है तो आलिम की बरकतसे बरसता है. (सुब्खानल्लाह !)

मेरे प्यारे आका صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो ! नमाज का आगाज कयामसे डोता है, प्वाड इमामे आ'जम डों, इमाम

★ हिक्मतो नमाज ★

मालिक डों, इमाम शाइई डों, या इमाम अडमद अडमद इब्ने डंभल डों. उन में से कोई ली इमाम डों, सबके नजदीक नमाज का आगाज कयाम ही से डोता है, कयूं ?!

तो मैं ईस नतीजा पर पडोंया के कुरआन मुकदसमें हुजूर صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم के अस्माअे गिरामीका जो जिंक हें उसमें रसूले आ'जम صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم का नाम आसमान पर अडमद, जमीन पर मुडम्मद है. कुरआने मुकदसमें डजरत ईसा عیسایہ का कौल बई तौर मौजूद " —(अस्सफ-६)

و مُبشراً برسولٍ یأتی من بعدی اسمه احمد

तर्जुमा : और उस रसूल की बशारत सुनाता हुवा जो मेरे बाद तशरीफ लाअेंगे उनका नाम अडमद है. —(क-जुल इमान)

इर परवरदिगारने मडभूब को अर्श पर बुलाकर नमाज अता इर्माई, जमीन पर नही दी गई. और अर्श पर आसमानी हुन्या पर मेरे मुस्तफा صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم का नाम **अडमद** है. अब **अडमद** को देभो तो ईस नामका आगाज अलिफ (I) से डो रडा है और **अलिफ** बणी है तो नमाज का आगाज ली बणे डोकर या'नी कयामसे डो रडा है.

मेरे प्यारे आका صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो ! हुन्या का डर इन्सान बुलंदी याडता है, हुन्याका डर इन्सान तरक्की याडता है, हुन्या का डर इन्सान बणेसे करीब डोना याडता है, जो बणा डो उससे करीब डो जाओ काम बन जाओगे. अगर किसी मालदारसे करीब डोंगे तो बर्यी की शादी डो जाओगी, किसी मालदारसे करीब डोंगे तो नोकरी मिल जाओगी, किसी

★ हिक्मतते नमाज ★

मालदारसे करीब छोगे तो मकान मिल जाये.

अल्लाहु अकबर ! दुन्या का ईन्सान मालदारसे करीब होने की कोशिश करता है. लेकिन ! मेरे मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم अल्लाह से करीब करने के लिये जमीन पर जल्वागर छूँ. और अल्लाह से करीब होने के लिये सबसे बणा अमल कुर्आनो उदीष की रोशनीमें देखा जाये तो सजदा ही नजर आता है. ईस लिये के सरकारे दो आलम صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ने इर्माया : — "من تواضع لله فقد رفعه الله" जो अल्लाह के लिये तवाज्जुअ (आज्जुअ) करे अल्लाह उसे बुलंदी अता करता है." अब जहनमें सवाल पैदा होता है, मौला ! क्याम के सभब से कुर्बे जुदावंदी नहीं मिलती ? रूकूअ के सभब से कुर्बे जुदावंदी की दौलत नहीं ? आभिर सजदे के अंदर वो कौनसी जुसूसियत है के बंदा सजदा में जाये तो मौलासे करीब हो जाये ? तो मेरे सरकार का इर्मान मिलता है :
"من تواضع لله فقد رفعه الله" अगरे सभसे जयादा किसी अमल के अंदर होता है तो वो सजदा ही के अंदर होता है के पूरा वजूद मिट्टी पे जुकाकर कड रडा है :
سبحان ربی الاعلیٰ-

तर्जुमा : "पाकी है तेरे लिये के मेरे परवरदिगार ! तू सभसे बणा है, सभसे बुललंद है."

आप नमाज की छिकमतों को मुभतलिफ़ अंदाजसे समजें में नमाज को आज अके अलग अंदाजसे पेश करना याडता छूं. ईस तरीके से पेश करना याडता छूं के आप यहां से अजम (पाको निश्चय) कर के उठें के नमाज पाबंदी से पण्डेंगे. क्यूं के यड नमाज डमें कुर्बे जुदा की दौलत भी अता कर देगी और

★ हिक्मतते नमाज ★

दिलों पे लगे छूँ अंजको ली मिटा देगी. जुदा की कसम ! अके गिरे छूँ अक्ये को सुधारने के लिये न जाने वालिहैन कितने जतन करते हैं, लेकिन मौला ! तेरी अजमतों पर कुर्बान ! के तूने बेशुमार जुदाईयों का ईलाज तो नमाज के अंदर रभ दिया है. जरा सोचो, जाईजा लो. मैं नमाज को मडभूबे जुदा صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم की अदा के तौर पर ली पेश करुंगा और जिस के सीने में मेरे मुस्तफ़ा जाने रडमत صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم की मडभूबत पैदा होगी, वो आजके बाद कभी नमाज को कजा नहीं करेगा.

सुनों ! नमाज क्या है ? नमाज की छिकमत को समजो. रभने इर्माया : **اقم الصلوة لذكری** "नमाज काईम करो मेरी याद के लिये." बंदा रात को बलुत शोर जमलों के बाद जब सोता है तो सुभुड की पोजीशन आप जानते हैं, नींद उसे नमाज के लिये उठने नहीं देती. के अयानक रभे कदीर की तरईसे अके मुनादी आवाज देता है, **"हय अलसलात, हय अललइलाह"** और सुभुड के भारेमें अके भास जुम्ला है, **"अससलातु जैरुम्बिनन्नीम"** कुर्बान जाओ ईस जुम्ले पर ! यार नमाजों के अंदर यड जुम्ला नहीं, लेकिन इजरकी नमाज के अंदर यड अेलान हो रडा है. मस्जिद से मोअज्जिन कड रडा है : **"अससलातु जैरुम्बिनन्नीम"** "नमाज नींद से बेडतर है." ईस लिये के सुभुड सादिक के बाद तुलूअ आइताब से पडले परवरदिगार की जानिबसे इरिशता रिजुक लेकर तेरे घर के दरवाजे पर पडोंय जाता है. अगर तू सोया रडा, अगर तू गाइल रडा तो तुजे कैसे मिलेगा ?! सुभुड जब होगी और सूरज आबोताब के साथ बाडर निकलेगा, उस वक्त तू नमाज

पण्डकर बाहर निकलता है तो सुन ले, ईस्लामका जंडा तेरे छाथों में डोगा और अगर तू इजर की नमाज कजा कर के अपने घरसे निकला तो शैतानका जंडा लेकर निकला !

देखीये ! सुब्ह की पोजीशन बणी अच्छी होती है. कोई भी दुकान, कोई भी स्कूल, दुनिया का कोई भी निजाम हो उन सारे निजामों के सिलसिले में देखें तो आप के सिवाये ई-सानी जनों के और दु-न्या कमाने के जडां तक मामलात हैं कोई भी यीज तुलूअ आइताबसे पडले जुलती नजर नहीं आती, सारे मामले तुलूअ आइताब के बाद नजर आते हैं. ईस लिअे जब बंदा सुब्ह बेदार होने के बाद कारोबार के लिअे पछोयने से पडले, मुलाजेमत पर जानेसे पेडले, दुकान ખोलनेसे पडले वुजू करता है और अल्लाह की बारगाहमें जर्बीने नियाज जुका कर अल्लाह की याद कर लेता है, फिर उसके बाद जब वो निकलता है तो मौला की रडमत को जोश आता है, अय मेरे बंटे ! जब तू सुब्ह उठकर अपनी दुकान की तरफ नहीं बण्डा, कारोबार की तरफ नहीं बण्डा बल्के रिज्क देनेवाले रज्जक को याद कर रडा है, तो मेरे बंटे ! मैं तुजे कैसे भूलूं ? तूने मुजे याद किया, अब सुन ले ! **فاذكرونى اذكرکم** (सू. बकरह, आ. १५२)

तर्जुमा : तुम मेरी याद करो, मैं तुम्हारा यर्था करुंगा.

—(क-जुल ईमान)

बंटे तूने मुजे याद किया, मैंने रिज्जक के इरिशते को कड दिया के उसके लिअे रिज्क का दरवाजा खोल दो. अब तू निकल अगर अक भी मिलेगा तो उस रिज्क के डलाल के अंदर बेशुमार बरकतें डोंगी.

आप सोचो, जाईजा लो, और गौर करो ! अल्लाह के रसूल **صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم** ई-सानों के लिअे, जानवरों के लिअे, सारी काअेनात के लिअे, सारे आलम के लिअे रडमत बन कर के जल्वागर डूअे हैं. और जैसे रडमत के अक बर्या के बिलकने की आवाज पर रसूले आ'जम **صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم** की आंभोंमें आसूं आ जाअें. जो रसूले आ'जम **صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم** किसी को बिलकता नहीं देख सकते, किसी को गिणगिणाता नहीं देख सकते, किसी बर्ये को अगर कोई सताअे तो मेरे मुस्तफा जाने रडमत **صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم** बेकरार हो जाअें, लेकिन अल्लाहु अकबर ! यही मुस्तफा जाने रडमत **صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم** कानून अता कर रहे हैं के :-

"जब बर्या सात साल का हो तो नमाज का डुकम हो ! और दस साल का हो जाअे तो उसे मारकर नमाज पण्डाओ !"

या रसूलल्लाह ! **صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم** आप तो रडमतुल् लिल् आलमीन बनकर तशरीफ लाअे और आप बर्यों को मारने का डुकम दे रहे हैं ?! अब आईअे सरकार के ईस ईशाद के बाद मैं आप को झैज ट्रेनिंग, झैज मशक और झैजियों की जिंदगी की तरफ लेकर जाता हूं ता के आपको मालूम हो के जिस नमाज को मामूली अमल समज कर के छोण रहे हैं उस नमाज के पीछे मौलाकी कितनी छिकमतें पोशीदा हैं. मेरे सरकार **صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم** ने कितनी बरकतें रणी हैं, आप जानते हैं के नमाज किस पर इर्ज है ? आकिल, बालिग मुसलमान पर इर्ज है. अब आपने मडसूस कर लिया के किस शप्स के उपर नमाज इर्ज होती है. लेकिन ! आप देखें, मेरे सरकार **صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم** इर्मा रहे हैं, बर्या दस साल का हो तो उसे मार कर के नमाज पण्डाओ ! आप

जानते हैं, जब कोई शप्स झोज के अंदर शामिल होना याहता है तो उसे पडली मुलाकातमें शामिल नहीं कर लिया जाता बल्के ट्रेनिंग होती है, उसे मशक कराई जाती है, उसकी बोडी (Body) की फिटनेस का ખयाल किया जाता है, उसे कई मर्तबा दौगाया जाता है, मेहनत होती है, मशकत होती है फिर उसकी तर्बियत ईस तरड से होती है के उसके अंदर ईताअत का ऐसा जजभा पैदा हो जाअे के जब कभी उसका कमान्दर उसे आवाज दे तो अेक आवाज पर त्मागता हुवा नजर आअे, वो कडे भणा हो जा ! तो झौरन भणा हो जाअे, वो कडे बैठ जा ! तो झौरन बैठ जाअे. ईस तरड जब तक ईताअत का जजभा न हो उस वकत तक झोजमें शामिल नहीं किया जाता !

मडभूबे ખुदा ﷺ ने हुकम दिया है के दस साल की उम्र में मारकर बर्य्यों को नमाज की तरफ ले जाओ. उसकी वजह यह है के सन्ने बलूग (पुप्तवय)को पछोंयने से पडले बर्य्यों की प्रेक्टिस हो जाअे, बर्य्यों की आहत बन जाअे. जब तुम दस साल की उम्रसे बर्य्ये को मारकर के नमाज पण्डाओगे तो उसके बालिग होने के बाद जब मोअज़ज़िन **हय्य अलरसलाह** कडेगा तो वो बिस्तर पर सोता नजर नहीं आअेगा ! बल्के मस्जिद की तरफ दौगता नजर आअेगा ! आप नमाज का झोजियों के अंदाज से जाईजा लें.

ईसी तरड आपने कभी सफ़ों के सिलसिले में गौर किया ?! मेरे सरकार ﷺ सफ़ों के सिलसिलेमें इर्माते हैं, कांधेसे कांधा मिलाकर भणे हो. आज जितना भी झोज निजाम यला रहा है अगर मैं यह कलूं तो भे जा न होगा के यह सब कुछ

अता है मुस्तफ़ा प्यारे ﷺ की. दुश्मन उमारे आका ﷺ के डर इर्मान की तडकीक कर रहा है, और बाद में कडने पर मजभूर होता है के जो कुछ मुस्तफ़ा ﷺ ने दिया आज तक किसीने नहीं दिया, और न दे सकता है. आप सफ़ों के दुइस्त करने का हुकम देभें के अगर कोई शप्स नमाज के लिअे भणा है फिर रुकूअमें जा रहा है, फिर सजदा कर रहा है, भणी तवज्जोड के साथ ईस मंजर को जडनमें रभें, और अेक तरफ़ झोजियों की पोजीशन देभें. कतार के अंदर झोज भणे डूअे हैं, कमान्दर टडल रहा है और देभ रहा है, सीना डेसा है, डाय डेसे हैं, पैर डेसे हैं, अकण के भणा है के नहीं ? अगर उसका मुंडा निकला है तो डाय की बंदूक से उसके मूंडे को ठीक कर रहा है, सुस्ती में भणा है तो पैर पे बंदूक मारता नजर आता है. झोज से कडा जा रहा है, सीधे भणे रडो ! अब अगर कोई लागिर नातवा (कमजोर) है तो झोजमें शामिल नहीं किया जाता. आप जरा देभें, अगर मुरदार की तरड भणा है तो निकाल दिया जाता है, झोज के अंदर उसकी अेन्टी नहीं !

अभ सुनो ! नमाज के सिलसिलेमें मेरे सरकारने इर्माया : **والركوع مع الراكعين** कयाम के सिलसिलेमें, रुकूअ के सिलसिलेमें, सजदे के सिलसिलेमें तरीका भौजूद है. अब कोई बंदा नमाज सुस्ती से पण्डे तो कुर्आन कडता है यह मुनाफ़िक की अलामत है, यह मो'मिन की अलामत नहीं.

إذا قاموا إلى الصلوة قاموا أكسالي (सू. निसाय्, आ. १४२)

तर्जुमा : जब नमाज को भणे हो तो डारे जसे. (क-जुल

ईमान)

★ हिक्मतते नमाज ★

मुनाफ़िक जब नमाज के लिये जगता है तो सुस्ती में जगता है. अल्लाहु अकबर ! रसूले आ'जम صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم का निजाम मिल रहा है के जब नमाज के लिये जगता है तो यह तसव्वुर करो के तुम्हारा रब तुम्हें देख रहा है, या यह तसव्वुर करो के तुम अपने मौला को देख रहे हो. अब मस्जिद का जर्जरा लो, मस्जिद रूखे जमीन की जन्त है. आप किसी झूठ को मदाने जंगमें ड्यूटी पर रखने के बाद हुन्या की बातचीत या कोई भी झलतू बात करते नहीं देखेंगे. और न ही वो धर नजर करेंगे. उसकी निगाह होगी तो सरहद की डिफ़ाजत पर होगी, हुश्मन पर होगी. लेकिन उसकी ड्यूटी जब अत्म हो जाये, अपने कमरेमें यले जायें, तो बात दूसरी हो जाती है. वो आपसमें गुफ्तगू भी करेंगे. या'नी झूठ जब मदाने जंग के अंदर होता है तो सारे भेलकूद से अपनी तवज्जोह को उटाकर अपनी ड्यूटी पर नजर रखता है. मदीने के ताजदार ने मस्जिद को अल्लाह का घर इर्माया, और रब्बे कदीरने भी मस्जिद को अपना घर इर्माया. फिर मस्जिद के सिलसिलेमें इर्माया के जब मस्जिदमें पड़ोय जाओ तो हुन्या की बातें न करना इस लिये के भाजार और खील है, जुदा का घर और खील है. अब तुम्हारी नजर हुन्या के जमेलों पर नहीं होगी, अब तुम्हारी नजर इमान की डिफ़ाजत और अपने मौला के करमपे होगी.

आप नमाज को मुप्तलिक अंगलसे देखो, मुप्तलिक ज़ावियासे नमाज को समजो, मैंने जब यह पण्डा तो वाकई अक अज्जब सी कैफ़ियत मेहसूस डूई के मेरे सरकारने नमाज ही के बारेमें इर्माया : **قَرَّةٌ عَيْنِي فِي الصَّلَاةِ** "नमाजमें मेरी आंभों की ठंडक है." नमाज रसूले आ'जम صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم की आंभों

★ हिक्मतते नमाज ★

को ठंडक पड़ोयाती है, आभिर क्यो ? इसलिये के नमाज रबसे मुलाकात की याद दिलाती है, क्युं के यही नमाज तो है जिस को रब्बे कदीरने मुलाकात के वक्त अपने मडभूब को तोड़केमें अता इर्माई थी. लेखाजा जब कोई बंदा नमाज पण्डता है तो हुजूर صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم को रब का दीदार याद आ जाता है. सरकार इर्माते हैं, "नमाजमें मेरी आंभोंकी ठंडक है." और आंभों को ठंडक उस वक्त मिलती है जब मडभूब को देख लिया जाये. और मेरे सरकार ने अपने रब का जल्वा शब्दे मेअराज आंभों से देखा था इस लिये सरकारने इर्माया, "नमाजमें मेरी आंभों की ठंडक है." बंदा ! तू नमाज पण्डेगा तो मुझे रब का दीदार याद आयेगा. और आंभों को ठंडक पड़ोयेगी.

अब सोचते यले जाईये और गौर कीजिये के कितनी डिक्मत है नमाज में ! लेकिन आप बताओ और जर्जरा लो ! आज नमाज के सिलसिलेमें उम कितना जयाल करते हैं ?! नमाज के बारेमें कितना गौर करते हैं ? अल्लाहु अकबर ! यह नमाज अपनी अदाईगी से पडले बंदो के गुनाहों को माफ़ करवा देती है.

नमाज पडले वुजू है और वुजू क्या है ? इर्माया गया है के, "अगर कोई शप्स वुजूसे पडले बिस्मिल्लाह शरीफ़ पण्ड ले और उसके बाद वुजू करे तो रब उसके पूरे वुजू के गुनाहों को माफ़ इर्मा देता है." नमाज आपने शुरुअ नहीं की बल्के आपने तो अम्नी वुजू किया है और धर मौलाने आपके गुनाहों को माफ़ इर्मा दिया ! अब आप नमाज के लिये आये हैं, यह नमाज क्या है ? और यह भी सोचें के पांय वक्त की नमाज क्युं इर्ज है ? तीन वक्त की होती, दो वक्त की होती, मुप्तलिक

મુખ્તલિફ ટાઈમ નમાઝ કે લિએ ક્યું મુકરર કિએ ગએ ? ઉસકી એક હિકમત યહ સમઝ મેં આતી હે કે બંદા જબ સુબહ ઘર સે નિકલતા હે ઓર જૈસે હી મારકિટમેં પહોંચતા હે કે દુન્યા કમાને મેં મસરૂફ હો જાતા હે. અબ એક તરફ સે દૌલત આવાઝ દે રહી હે, માલ ઉસે પુકાર રહા હે, આ મુઝે લેકર જા ! ઓર માલ કમાને મેં ઈન્સાન જબ મસરૂફ હો જાતા હે તો બળી અજબ કેફિયત હોતી હે. વો ભૂલ જાતા હે કે મેં કિસ કા બંદા હૂં ! ઉસે દૌલત જમા કરને સે ફુરસત નહીં મિલતી, કે દોપહર કા વક્ત હોતા હે ઓર મુનાદી આવાઝ દેતા હે : **અલ્લાહુ અકબર ! અલ્લાહુ અકબર !** આપ ઝરા સોચો ઓર ઝરા જાઈઝા લો, આજ માઈક પર અઝાન કે સિલસિલે મેં પાબંદિયા કી કોશિશ ક્યોં કી જા રહી હે ? ઉસકી ક્યા વજહ હે ?! ઉસકી સબસે બળી વજહ યહ હે કે અઝાન કી આવાઝ કાનોંમેં પહોંચેગી તો બંદા મસ્જિદ કી તરફ જાએગા ઓર જબ મસ્જિદ કી તરફ જાએગા તો વક્તે નમાઝ સર ઝુકાએગા ઓર વક્તે જેહાદ સર કટાએગા. ઈસ લિએ અઝાન કી આવાઝ કાનોંમેં ન પહોંચને દો, મુઝે બતાઓ ક્યા જહાં ગલત કામ હો રહે હેં વહાં પાબંદી લગાઈ જા રહી હે ?! નહીં ! વહાં પાબંદી નહીં લગાઈ જા રહી હે. શરાબ કે અડોં પર પાબંદી નહીં, મ્યુઝિક કે સિલસિલેમેં પાબંદી નહીં, નાયગાનોં કે સિલસિલેમેં પાબંદી નહીં, લેકિન ! અઝાન કી આવાઝ કે સિલસિલેમેં પાબંદી ક્યું ?! ઈસલિએ કે વો જાનતે હેં, યહ આવાઝ અપને અંદર કુવ્વત રખતી હે, કાનોંમેં જબ પહોંચેગી તો બંદા દૌળતા હૂવા મસ્જિદ કી તરફ જાએગા.

અય પ્યારે સરકાર صلی اللہ علیہ وسلم કે દીવાનો ! રબ્બે કદીર અપને મા'બૂદ હોને કી યાદ દેહાની કે લિએ બંદેકો દિનમેં પાંચ

મર્તબા મુનાદી કે ઝરીઆ આવાઝ પહોંચવાતા હે કે દૌલત તુઝે દેનેવાલા કૌન હે ? ઉસે યાદ રખના, ભૂલ ન જાના, વરના તેરા નુકસાન હોગા.

وَأَقِمِ الصَّلَاةَ لَذِكْرِي

તર્જુમો : "નમાઝ કાઈમ કરો મેરી યાદ કે લિએ." અબ તુમ યહ નહીં કહ સકતે કે મૌલા ! મેં ક્યા કરું ? મુઝે કોઈ બુલાનેવાલા નહીં થા ! મેં કેસે જાતા મેં ભૂલ ગયા થા ! લેકિન અલ્લાહ ફર્માએગા, મેરે બંદો ! મેંને તેરે ઈસ ઉઝરસે પહલે એક એસા ઈન્તેઝામ કર દિયા થા કે તેરે પાસ યહ ઉઝર ભી ન રહે. તુઝે પુકારનેવાલા પુકારેગા : **હય અલરસલાત** "આઓ ! નમાઝ કી તરફ !" **હય અલલ ફલાહ** "આઓ ! કામયાબી કી તરફ !"

મસ્જિદસે મોઅઝ્ઝિન દિનમેં પાંચ મર્તબા સારી ઉલઝનોં સે નિકાલ કર તુમ્હે અલ્લાહ કે ઘરકી તરફ બુલાતા હે. અબ બંદા જબ ઝોહર પળહને કે લિએ ગયા તો ઉસે યાદ આ ગયા, નહીં ! નહીં ! દૌલત સબસે બળી ચીઝ નહીં હે, મૌલા કરીમ હે, મૌલા રઝઝાક હે, રોઝી દેનેવાલા વહી હે. દૂસરે એ'તેબાર સે દેખો, મા'બૂદ અપની યાદ કે એલાવા બંદો કો યહ ભી બતાના યાહતા હે કે તુમ મુઝ સે દૂર ન હો જાઓ, બલ્કે સજદે મેં આ જાઓ તા કે કુર્બકી દૌલત તુમ્હે મિલ જાએ. મેરે કરીબ રહા કરો, સુનો ! દુન્યા કા દસ્તૂર હે કે બંદા કહીં મુલાઝિમત કરતા હે યા તા'લીમ હાસિલ કરતા હે તો હાઝરી ઓર ગૈર હાઝરી હોતી હે, એબસન્ટ (Absent) પ્રેઝન્ટ (Present) વાલા મામલા રહતા હે. અબ સુબહ કે વક્ત તુમ મસ્જિદ મેં જાકર અપના નામ

દર્જ કરવા દિએ કે, મૌલા ! મੈં તેરા હી બંદા હું, ઈસી લિએ તેરે સામને સર ઝુકા રહા હું. ફિર દોપહરમેં તુમને હાઝરી લગાઈ. મૌલા ! મੈં તેરા હી બંદા હું, મੈં દુન્યામેં ઈતના ફિદા નહીં હો ગયા હું કે તુઝે ભૂલ જાઉં. મૌલા ! મੈં તેરા અબ્દ બનકર ઝિંદગી ગુઝાર રહા હું. ફિર ઈસી તરહ દિનમેં પાય મર્તબા હાઝરી દેતા હે. ઓર અલ્લાહ કી બારગાહમેં જબ પાંચ મર્તબા કી હાઝરી કા રજિસ્ટર પહોંચતા હે તો કરીમ કરમ ફર્માતા હે, મેરે બંદે ! જબ દિનમેં પાંચ મર્તબા સારે જમેલોં કો છોળકર મેરી બારગાહ મેં અપને સરકો ઝુકાતા હે તો સુન ! તેરે સજદે કબૂલ કર લિએ જાતે હેં ઓર તુઝે ગુનાહોં સે બચાને કા એહતેમામ કિયા જાતા હે. નમાઝ બહુત બળી ઈબાદત હે, બહુત અફઝલ ઈબાદત હે.

અબ દૂસરે એ'તેબારસે આપ દેખે, રબને ફર્માયા :—

ان الصلوة تنهى عن الفهشاء والمنكر (સૂ. અન કબૂત, ૪૫)

તર્જુમા : "બેશક ! નમાઝ મના કરતી હે બેહયાઈ ઓર બુરી બાતસે. —(કન્ઝલ ઈમાન)

યા'ની બેશક ! નમાઝ બેહયાઈયોં ઓર બુરી બાતોંસે રોકતી હે. આપ ઝરા સોચો ! તારીખ કે અવરાક ઉલટકર દેખો તો હર માં જિસ કે બતનસે કોઈ નેક ઓલાદ જન્મ લી હે ઉસકી માં બચપન હી સે સર ઝુકાને કા જઝબા ઓર ઈબાદત કરને કી તર્બિયત દેતી હે. કૌન નહીં જાનતા કે હઝરત ઈમામ હુસૈન રઝી અલ્લાહેને અપની જાન સજદેમેં દી હે. આબિર ક્યૂં ?! ઉસકી વજહ યહ થી કે માં ને બચપન હી સે સજદા સિખાયા થા. માં ને બતાયા થા, બેટા ! યહ સર ઉસીકી બારગાહ મેં ઝુકને કે લિએ હે. ઈસ તરહ માં ને સજદે કી ઈત્ની મહબ્બત દિલમેં પેદા કર

દી થી કી જબ આખરી વક્ત આયા તબ ભી આપ સજદા હી મેં નઝર આ રહે હેં. ઈસ તરહ જિત્ને ભી ઓલિયાએ કિરામ رَضَوَانَ اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِمْ سَامِعِينَ કી તારીખ ઉઠાકર આપ પળેંગે, સજદોં કી કષરત ઝરૂર મિલેગી. વજહ ક્યા હે ? વજહ યહ હે કે હર છોટા બળેસે કરીબ હોના ચાહતા હે ઓર સજદા એસા ઝરીઆ હે જો સબસે બળેસે કરીબ કર દેતા હે, યા'ની અલ્લાહ સે કરીબ કર દેતા હે. આજ મુસલમાન જો દર દરકી ઠોકરેં ખા રહા હે, આજ મુસલમાન જો પરેશાની કે અંદર ઝિંદગી ગુઝાર રહા હે, આજ મુસીબતોં કે બાદલ જો મુસલમાનોં કે સરોં પર મંડલાતે નઝર આતે હેં, ક્યા સબબ હે ઉસકા ? ઉસકા સબબ યહ હે કે હમેં ખયાલે રિઝ્ક તો હે રઝઝાક કા ખયાલ નહીં ! હમ કભી નફ્સકી પેરવી કરતે નઝર આતે હેં, કભી ગુનાહોં કી ગુલામી કરતે નઝર આતે હેં.

મેરા રબ ફર્માતા હે : નમાઝ બેહયાઈ ઓર બુરી બાતોં સે રોકતી હે. આપ દેખે, કેસે રોકતી હે ? આપને જબ ક્યામ મેં અલ્લાહુ અકબર ! કહકર હાથ બાંધ લિએ, ફિર આપકો હુકમ દિયા ગયા અપની નિગાહ કો સજદે કી જગહ પર રખો !

યા'ની એક તરફ યહ હુકમ હે કે ક્યામ કી હાલતમેં તુમ્હારી નિગાહ સજદાગાહકી તરફ હો, તા કે જબ તુમ બાહર નિકલો તો તુમ્હારી નિગાહ ખિળકિયોં પર યા કિસી ગૈર મહરમ પર ન હો બલકે અપની રાહ પર હો. યહ નમાઝ તુમ્હેં નિગાહોં કો નીચી રખને કી તા'લીમ દે રહી હે. લેહાઝા જબ અલ્લાહ કી બારગાહમેં થે તો હાલતે નમાઝ મેં તુમ્હારી નિગાહોં ઝુકી હુઈ થી, અબ તુમ બાહર નિકલ કે નિગાહોં કો આવારા મત કર દો ! બલકે નિગાહોં કો ઝુકાએ ઝુકાએ રખો. ઈસ તરહ યહ નમાઝ

तुम्हें बेहयाईसे रोकती नजर आ रही है. आप देखते बल ज्ञानें, नमाज अल्लाह का दर हिल में कैसे पैदा करती है ?

आज कोई भी ऐसा बे गैरत आपको नहीं मिलेगा जो नमाज से पहले वुजू न करता हो. लेकिन मुझे बताईए आपका वुजू है या नहीं उसका इल्म आप के ईलावा किसी और को हो सकता है ?! आप ही जानते हैं के आप का वुजू है या नहीं. लेकिन आप बे वुजू नमाज नहीं पण्ड रहे हैं. यह कौन सा जलबा है जो आप को बे वुजू नमाज पण्डने से रोक रहा है ? वो अपने परवरदिगार का दर है. आप तय कर लेते और सोयते हैं के कोई देखे या न देखे मेरा करीम तो देख रहा है ! मेरा रब तो देख रहा है, वहींसे यह मिजाज बनाओ के जो वुजू की कैफियत को देख रहा है, क्या रास्ते के किरादार को वो नहीं देख रहा होगा ?! गलियोंमें चलते छूए वो नहीं देख रहा होगा ? अल्लाह अकबर ! नमाज मिजाज दे रही है के अय बंदे जिस तरह से तेरा करीम तुझे देख रहा है जैसे ही तेरे अमल को भी देख रहा है, फिर हिलमें दर पेदा होता है. यही इर्क है हमारी नमाजों में और औलियाए किराम की नमाजों में. गौर करो ! इर्क है बहुत बणा इर्क है ! कैफियत तो देखो ! सैयेदना अली के कदम मुबारक में तीर लगा है, निकालना याहते हैं तो परेशानी होती है. आप इर्माते हैं, मैं जब डालते नमाज में रहूं तब मेरा तीर निकाल लेना. डरत अली ! आबिर आप की निगाहों में किस का जल्वा है के जब नमाज की डालत में हों तो तीर निकाल लिया ज्ञाने और तकलीफ भी न हो ?! तो डरत अलीने जो मदीना के ताजदार से तर्बियत पाई थी वो तर्बियत जवाब देती नजर

आई के मेरे सरकारने इर्माया, नमाज इस तरह पण्डो जैसे तुम जुदा को देख रहे हो. और जो किसी के हीदार के अंदर मडल हो उसे तकलीफों का अहसास नहीं होता, उसे तकलीफ का जयाल नहीं होता. इस लिअे मैं जब नमाज पण्डता हूं तो यह सोयता हूं के मौला को मैं देख रहा हूं, वरना कम अज कम यह तसव्वुर रहता है के मेरा करीम मुझे देख रहा है.

यहां तो नमाज में सारा हिसाब हो जाता है ! भूली छूई यीजें याद आ जाती हैं ! अब आपमें से कोई साथी मुज से यह कहे के आप कहते हैं के नमाज बेहयाई से रोकती है लेकिन ! बहुत सारे लोगों को हम देखते हैं के नमाज भी पण्डते हैं और बेहयाई भी करते हैं ! उसकी क्या वजह है ? क्या सबब है ?

तो सुनो ! आप अगर किसी इंकटरी में, किसी कंपनी में गअे जो गाणीयों की कंपनी है, माइती भरीद ने के लिअे पछोंये. देभा यह गाणी बणी अरथी है. आपने उसकी पूरी तफसील मावूम की, उसने तफसील बता दी, तो आपने कीमत दे कर गाणी भरीद ली. उसके बाद आप गाणी लेकर निकले, हिलो हिमाग के अंदर यह तसव्वुर है के मैं इस कार के जरीआ अपनी मंजिल तक बहुत जल्द पछोंय जाऊंगा. बादर निकले अयानक गाणी का टायर भराब हो गया. अब आप दौणने की कोशिश करेंगे ? नहीं ! बल्के रोक देंगे. फिर आप पछोंयेंगे कंपनीवाले के पास. बणे अज्जब आदमी हो ! तुमने कडा था के यह कार लोगे तो बणी तेजी से मंजिल तक पछोंय जाओगे ! मगर मेरी गाणी का टायर भराब हो गया है, अब मैं चलाना याहता हूं तो गाणी नहीं चलती. तो वो जवाब देगा, टायर अगर पंयर

छो ज्ञाने तो उसके बाद वो गाणी बलती नहीं है, पहले उसको दुरुस्त करो ! फिर आपने उसको दुरुस्त किया, उसके बाद गाणी में पेट्रोल कम था, आप निकले और पेट्रोल पंप पर पहुँचे. अब पेट्रोल के बजाय आपने डिजल डलवा दिया, उसके बाद चलाना यादते हैं तो थोड़ी देर के बाद गाणी बंद हो जाती है. फिर कंपनीवाले के पास आप पहुँचे, तुम क्यूं मजाक कर रहे हो ?! बणी अजब पोलीशन है ! मैं धुनें पैसे देकर यह चीज खरीदा हूँ लेकिन मेरी गाणी बलती नहीं ! अरे आ गया और गाणी रुक गई. वो कहेगा, आपने कौनसा तेल इस्तेमाल किया है ? आप कहेंगे, डिजल ! वो कहेगा, अरे भाई ! इसमें पेट्रोल इस्तेमाल होता है ! आप डिजल इस्तेमाल करेंगे तो कहां से चलेगी ?!

यह तमषील सिर्फ समझने और समझाने के लिये है, वरना सारी चीजें जब परफेक्ट हों तब गाणी परफेक्ट चला करती है. अब नमाज के सिलसिलेमें भी समझ लो के जब शुब्हावाला (शंकाभय) या लुक्माअे हराम डलक के नीचे उतरेगा तो नमाज की वो बरकत नजर नहीं आयेगी, जब जिस्म पर लिबास हराम का होगा तो नमाज के वो इवार्ड नजर नहीं आयेगे, आप सोचेंगे, अब हम कहां तकरीक करने जायें ? घरों में अनाज पणा हुवा है वो कैसा है ? जिस्म पर लिबास है वो कैसा है ? हम नहीं जानते ! तो अब बताईये, हम क्या करें ?! तो सुनो ! आजसे यह अहद करें के जितने साबिका (पाछला) गुनाह डूअे हैं कभी वो गुनाह नहीं करेंगे और अपनी जिंदगी को गुजारेंगे तो डूअूर صلوات الله عليه وسلم के इर्मान के मुताबिक गुजारेंगे. उसी के साथ साथ नमाज के मसाईल से

वाकिफियत भी जरूरी है अगर मसाईल नहीं जानते होंगे तो उसकी वजहसे भी नमाज के अघरात आपके उपर मुत्तब छोते नजर नहीं आयेगे. लेलाजा नमाज के लिये जिन जिन चीजों का हुक्म आया है उन सारी चीजों को दुरुस्त करें फिर नमाज की बरकतें मिलती नजर आयेगी. लेकिन ! यह भी समझ लें :-

એક ફર્ટ ઈ'બાદત હી નહીં મર્દે મુજાહિદ
और भी तो कुछ शाहे उमम छोण गये हैं

हम सिर्फ नमाज पण्डने की ता'लीम नहीं देते, वो और जमाअतें होंगी जो नमाज ही की बात करती है. इस लिये के कोई शप्स अगर किसी बादशाह के यहां मुलाजिम हो और बादशाह उसे कहे, जाओ ! भीवी बर्यों के डक्क भी अदा करो. फिर भी वो दरवाजे पर भणा हुवा बादशाह सलामत आप का क्या कलना है ! और बादशाही की ता'रीफ ही कर रहा है, और जब के बादशाह कल रहा है घर पर जाओ ! बादशाह कल रहा है, हुकान ખોલો ! बादशाह कल रहा है, भीवी बर्यों के डक्क अदा करो ! डलाल कमाई कमाओ ! जाओ ! बर्यों की ता'लीम का इन्तेजाम करो. और वो कल रहा है, बादशाह सलामत आप का क्या कलना ! बताओ ! उसका बादशाह उससे भूश होगा ? नहीं होगा. तो यह सारी मिषालें समझने और समझाने के लिये हैं, हमारे रब की जात इससे पाक है. बात यह है के हम सिर्फ नमाज पण्डते रहें और रसूले पाक صلوات الله عليه وسلم की मडब्बत जिसके बारेमें रब्बे कदीरने इर्माया है अगर उसको हमने सीने में दाखिल नहीं की तो मौला नमाजों को कबूल नहीं इर्मायेगा.

★ हिक्मतो नमाज ★

अगर हमने भीवी बर्यो के उक्क अदा नहीं कीये, हमने ता'लीम का बयाल नहीं किया, बाप बिस्तर पर तीमारदारी के (याकरी) लिअे ईन्तेजार कर रहा है के बेटा आयेगा और मेरी दवा लेकर आयेगा. लेकिन ये जनाब यालीस दीनकी जमाअतमें गये डूअे हैं ! और समजते हैं के बाप को शिफ़ा मिल जायेगी. अरे सोचो ! जब उजरत उवैस करनी رضي الله عنه मां की भिदमत की वजहसे रसूले पाक صلى الله عليه وسلم के दीदार के लिअे छाजिर न हो सके, फिर भी सरकार ईतने राजी हो जाते हैं के झड़के आ'जम رضي الله عنه को भेजते हैं, जाओ ! उवैस करनी رضي الله عنه को मेरा पैरहन देना और कडना, मेरी उम्मत के लिअे बप्पिशश की दृआ करे ! और यहां (तब्लीग ढोंगी की तरफसे) ता'लीम दी जाती है के सब कुछ तस्बीह है !

बिला शुब्हा तस्बीह अपनी जगह पर मुसल्लम है, मगर मौला बंधों के सजदों का मोडताज नहीं है, बल्के बंधों में डिसिप्लिन के लिअे और अपनी याद के लिअे नमाज का हुकम दिया और नमाज के सिलसिलेमें इर्माया, बंदे नमाज बे उयाई और भुरी बातों से रोकती है. आप देखें, बर्या अगर यरस का आदी बन जाये, शराब का आदी बन जाये, वालिदैन परेशान होते हैं के बर्येको कैसे सुधारें ?!

लेकिन ! बर्या अगर नमाज का आदी होता तो शराब के अडों पर न जाता, ईस लिअे के कुर्आन कडता है :-

لا تقربوا الصلوة وانتم سكارى (सू. निसा, ४३)

तर्जुमा : "नशाकी डालतमें नमाज के पास न जाओ."

-(क-जुल ईमान)

★ हिक्मतो नमाज ★

या'नी नमाज के करीब मत जाओ उस डालमें के जब तुम नशेमें हो. अब मुझे बताओ, अगर बर्ये के हिलो हिमाग के अंदर नमाज की अजमत पैदा की गई होती, बर्ये को नमाज का आदी बनाया गया होता, तो शराब के अडे पर न जाता. ईस लिअे के वो नमाज से मडुब्बत करता और नमाज की तरफ जाने से रोकनेवाली डर यीजसे अपने दामन को बयाता नजर आता. नमाज काईम करो अल्लाह की याद के लिअे.

यहां यह भी बताओ ! बरेली के ताजदार ईमाम अडमद रजाने सिर्फ सलाम पण्ड कर ही नहीं बताया ! नमाज तो ऐसी पण्डि के भुदा की कसम माजी करीब में अदाईगीअे सलात के जजबे और जमाअत की पाबंदी के सिलसिलेमें उनकी नजीर (उदा.) मिलना मुश्किल है. सोचो ! ईमामे ईशके मडुब्बत की जिंदगी के आबरी अय्याम थे, जिस्मसे रूड का रिश्ता जब टूटने के करीब था, बिस्तरे मर्ग पर प्वाब पजीर थे, (मृत्युशैयाअे डता) जैसे आलम में जब अजान की आवाज कानों के अंदर पडोंयती है तो आ'ला उजरत हो साथियों के कांधे पर डाय रभकर अलालत के भावजूद मस्जिद की तरफ जा रहे हैं, मस्जिद की तरफ बण्ड रहे हैं. नमाज जब अदा कर ली तो लोगों ने कडा, डुजूर ! ईस आलम में मस्जिद की तरफ आने की क्या जउरत ?!

कुर्आन जाओ ! ईशके रसूल का पयकर जवाब देता है, मैं ने सोया, अपने नबी की ईस सुन्नत पर भी अमल कर लूं, ईस लिअे के जब रसूले आ'जम صلى الله عليه وسلم अलील थे और मस्जिद की तरफ नमाज के लिअे बण्डे थे तो पैरों में सकत व

कुवत बजाहिर नजर नहीं आती थी. सरकारे दो आलम
 ﷺ दो सडाभा के कांधे पर डाय रणे मस्जिद की तरफ जा
 रहे थे. अहमद रजाने सोया अपने नबी की इस अदा पर भी
 अमल कर के अपने आका को भूश कर दूं! कौन कडता है इमाम
 अहमद रजाने सिर्फ सलाम की ता'लीम ही है? बल्के इमाम
 अहमद रजाने जिस अेडतेमामसे सजदे किये हैं अताओ तुम्हारे
 पास ऐसा कोई सजदा करनेवाला है?! और सुनो! इमामे
 ईशको मडबूतने किसी अमल पर भरोसा नहीं किया, न
 जिब्रईलकी मदद तलब की! इस लिये तो कडते हैं :-

पुल से उतारो राह गुजर हो जपर न हो
 जिध्रील पर पिछाअें तो परडो जपर न हो

सरकार डमें जिब्रईल के परकी जउरत नहीं, डमें तो
 अस ईसकी जउरत है :-

“रउा” पुलसे अज वजद करते गुजरीअे
 डे है रण्णे सल्लिम सदाअे मुहम्मद ﷺ

यड कौन कड रडा है? यड वो कड रडा है जिसका सीना
 ईशके रसूल का महीना था, जिसने जिंदगी के किसी गोशे के अंदर
 और किसी लम्डे में अपने मडबूत को कभी न भूलाया था.
 इस लिये तो भूड कडते हैं :-

जे न भूला हम गरीबों डो “रउा”
 याड उसडी अपनी आदत डीजिये

या रसूलवलाड! जब आप डम गरीबों को नहीं भूले तो
 डम ऐसे अेडसान इराभोश के आप को भूल जाअें?! मेरा रब

भी नमाज के सिलसिलेमें इर्माता है : "नमाज काईम करो मेरी
 याद के लिये." लेकिन! अंदो! अगर मैं सजदों का तरीका अता
 देता, मैं नमाज का तरीका अता देता तो तुम मडबूत की
 बारगाडमें डैसे जाते?! और फिर अपनी मरजीसे जरा नमाज
 पण्ड के अता दो! इस तरड के कयाम बादमें करना, सजदा
 पडले करो! है किसीकी डिम्मत? जे यड कडते हैं, "मआजवलाड
 मिन जालिक" के नबी जिंदा नहीं है! मैं पूछता डूं, जे भूड
 अपने नबी की अदा को मरने न दे वो अपने नबी को डैसे
 मुरदा रब सकता है?! जब नबी की अदा जिंदा है और अय
 इमाम शाईई! رضي الله عنه आपकी अजमतों पे कुर्बान! अय
 इमाम मालिक! رضي الله عنه आपकी अजमतों पे कुर्बान! अय
 इमाम अहमद इब्ने डंभल! رضي الله عنه आपकी अजमतों पे
 कुर्बान! अय इमामे आ'जम अबू डनीडा! رضي الله عنه आपकी
 अजमतों पर कुर्बान! के इन यारोंने जिस जिस तरीके से अदाअे
 मुस्तडा صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم को देभा अपना मसलक बनाकर अदाअे मुस्तडा
صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم की डिंजत का अेडतेमाम इर्मा दिया. गोया रब अता
 रडा है, अंदे! जब मडबूत صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم की अदा मडकूड है तो
 मडबूत भी जिंदा है. और सुनो! अरैली के ताजदार वडी
 अकीदा देते हैं :-

तू जिंदा है वल्लाह! तू जिंदा है वल्लाह!
 मेरी यश्मे आलम से छुप जाने वाले!

सुनो! "सुन्नी दा'वते इस्लामी'का डूड परवर सुन्नी
 ईजतेमा तुम्हें यड दर्स देता है के वडादारे रसूल बनकर इस
 तरड जओ के जिंदगी के किसी गोशेमें डुजूर صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم से

બેવફાઈકા કોઈ જઝબા પૈદા ન હો. કભી સરકાર કે એહસાન કો ભૂલને કા તસવ્વુર ભી મત કરના ! રબ્બે કદીર તો અપની ઈબાદત મેં ભી મહબૂબ કે જલ્વે દેખના ચાહતા હૈ, કિયામમેં તુમ અહમદ અલિફ નઝર આતે હો, તુમ રુકૂઅમેં જાતે હો તો અહમદ કી હે બન જાતે હો, સજદેમેં મીમ નઝર આતે હો ઓર કાઈદે મેં અહમદ કી દાલ નઝર આતે હો. જબ કે નમાઝ ખાલિસ ખુદા કે લિએ હૈ. લેકિન ! આપ સોચો ! રબ્બે કદીર ફર્માતા હૈ, બંદો ! મેંને તુમ કો પૈદા તો કર દિયા હૈ, લેકિન ! તુમ્હેં દેખના ચાહતા હૂં તો મહબૂબ કી અદામેં દેખના ચાહતા હૂં ! તુમ રુકૂઅમેં જાઓ તા કે મહબૂબ કી અદા મહફૂઝ હો જાએ. તુમ સજદે મેં જાઓ તા કે મહબૂબ કી અદા મહફૂઝ હો જાએ. અય સરકારે દો આલમ કે દીવાનો ! હમ કો બરૈલી કે તાજદારને કોઈ નયા અકીદા નહીં દિયા, બલકે ઈશક કા જામ પિલાયા હૈ. અક્લકી બાત ઓર હૈ ઈશક કી બાત ઓર ! અક્લ કુછ ઓર કહતી હૈ, ઈશક કુછ ઓર કહતા હૈ ! હઝરત ઈબ્રાહીમ કો અક્લ બઝાહિર કહતી થી, આગ મેં અપને આપ કો ડાલ રહે હૈં ? લેકિન ! ઈશક કહા રહા હૈ, આગ કી ક્યા હકીકત હૈ ? માલિક કહ રહા હૈ, બાત માનો ! ઈશક ને છલાંગ લગા દી, ચલે ગએ ઓર આગ બાગ મેં તબદીલ હો ગયા !

દુન્યા કહતી હૈ કે ઈમામ અહમદ રઝા કો વો મકામ ન દો ! મેં કહતા હૂં, તુમ્હારી અક્લ કુછ ભી કહતી હો લેકિન ! ઈશકને તો ઉનકો ઈસ તરહ ઝિંદા કર દિયા હૈ કે જહાં વો નહીં પહોંચે વહાં ઉનકા સલામ પહોંચ ગયા !

લેકિન ! કમઝોરી હમારી ભી હૈ, હમને ઈસ આશિકે

રસૂલસે સિફ મહબૂબત કા દા'વા કિયા હૈ, ક્યા ? જબ ઈમામે ઈશકો મહબૂબત કી તેહરીર દુન્યાવાલોં તક પહોંચા કર હમ કિસી હદ તક ઉનકે અકીદે કી હિફાઝત કર સકતે હૈં તો ખુદા કી કસમ ! અગર કિરદારે ઈમામ અહમદ રઝા અપના લેં તે તો દુન્યા આશિકે આ'લા હઝરત બન જાતી. આજ હમેં ઈસ કિરદાર કો અપનાને કી ઝરૂરત હૈ. બતાઈએ ! કોઈ મુઝે કહે, કભી આ'લા હઝરતને એક વક્ત કી નમાઝ કઝા કી હો ?! કભી માં બાપ કે એહકામ કી ખિલાફ વરઝી ઈમામ અહમદ રઝા ને કી હો ? કભી ઈમામે ઈશકો મહબૂબત ને અપને નફ્સ કે લિએ કુછ કિયા હો ? ખુદા કી કસમ ! જો ભી કિયા સિફ સરકારે દો આલમ સલ્વેલામીની કી રઝા કે લિએ કિયા.

કામ વો લે લીજીએ તુમ કો જો રાઝી કરે
ઠીક હો નામે “રઝા” તુમ પે કરોળોં દુરદ

"સુન્ની દા'વતે ઈસ્લામી" તુમ્હેં યહ પયગામ દે રહી હૈં ઓર અલ્હમ્દુલિલ્લાહ ! યહ સદકા હૈ ગૌષો ખ્વાજા કા, યહ સદકા હૈ ઈમામે ઈશકો મહબૂબત કા કે દુન્યા રોકના ચાહતી હૈ ઓર યહ સૈલાબ બળહતા જા રહા હૈ ! ઓર યહાં જિત્ને ભી આએ હૈં કોઈ પેટ્રો ડાલર હાસિલ કરને નહીં આયા હૈ, તુમ બુલાતે હો તો દૌલત કે સહારે બુલાતે હો ! હમ બુલાતે હૈં તો મદીનેવાલે કે સહારે બુલાતે હૈં ! હમને કિસી કો નોકરી કી લાલય નહીં દી ! હમને કિસી કો ફૈરેન લે જાને કી દા'વત નહીં દી ! હમને કિસી કો રિક્ષા દિલાને કી લાલય નહીં દી ! બલકે હમને લાલય દી હૈ કે દીવાને બન જાઓ અપને નબી કે ! મસ્તાને બન જાઓ અપને આકા કે ! ન ખુદા કે દેનેમેં કોઈ કમી હૈ ન મેરે

મુસ્તફા કે તકસીમ કરને મેં કોઈ કમી હે. વો વક્ત બહુત કરીબ હે ઈન્શાઅલ્લાહુલ્ અઝીઝ ! વો દિન દૂર નહીં કે વો સબ ભી સુન્નિયોં કે પરચમ તલે હોંગે.

આપ સોચતે હોંગે, ઈસ કિસ્મ કી ગુફતગૂ ક્યોં હો રહી હે ? યાદ રખો ! આજ ફિલિસ્તીન કે મુસલમાનોં પે જો જુલ્મો સિતમ કી બારિશ હો રહી હે ઓર વહાં મદદ કરને કે લિએ કોઈ નહીં પહોંચ રહા હે.

મેં પૂછતા હૂં, ઝરા જાઓ તબ્લીગી જમાઅત લેકર વહાં ! ફિલિસ્તીની બચ્ચે પથ્થરોંસે તુમ્હારે સરકો ઝખ્મી કર દેંગે ! ઈસલિએ કે તુમને જઝબએ જેહાદ કો મુદ્દા કર દિયા હે ઓર હમારા દીન વક્તે નમાઝ સર ઝુકાને કી ભી તા'લીમ દેતા હે ઓર વક્તે જેહાદ સર કટાને કી તા'લીમ દેતા હે. સુનો મુસલમાનો ! મેં તુમ્હેં પયગામ દેના યાહતા હૂં મુઝે બળી મસરત હાસિલ હો રહી હે આજ કે ઈસ રૂહ પરવર સુન્ની ઈજતેમામેં ઈસ સૈલાબ કો દેખને કે બાદ મુઝે યહ મેહસૂસ હો રહા હે કે આપ કા ઝમીર અબ જાગ ચુકા હે. આપને મદીનેવાલેકી તરફ અપના રુખ કર લિયા હે ઓર ઝાહિર સી બાત હે જબ કાસાએ ગદાઈ ઉસ આકા કી તરફ હો જાએ ફિર ક્યા કહના ! વો તો એસે હે કે :-

ખૂદ ભીક્ર દેં ઓર ખૂદ કહેં મંગતે ક્રા ભલા હો

ઓર બરેલી કે તાજદાર ઈસ લિએ કહતે હે :-

ચમક તુઝ સે પાતે હેં સબ પાનેવાલે
મેરા દિલ ભી ચમકા દે ચમકાનેવાલે

આજ કા યહ રૂહ પરવર સુન્ની ઈજતેમા બતા રહા હે કે

આપને અપના રુખ મદીને કી તરફ કર લિયા હે. લેહાઝા અબ ઝહન મેં બિઠા લેં ઓર વા'દા કરેં કે વો ચીઝે જો મદીને કી તરફ પહોંચનેમેં રુકાવટ બનતી હેં આજ સે ઈન્શાઅલ્લાહ ! ઉસસે પરહેઝ કરને કી કોશિશ કરેંગે ઓર હમેશા પરહેઝ કરતે રહેંગે. (ઈન્શાઅલ્લાહ !)

વો કોનસી ચીઝે હેં જો રસૂલે આ'ઝમ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم કી કુર્બતસે રોકતી હે ? વો હે નાય, ગાને, બાઝે તમાશોંકી મહબ્બત. કુર્આન ઉઠાકાર દેખો !

ومن الناس من يشتري لهو الحديث ليضل عن

سبيل الله بغير علم ويتخذها هُزوا

(સૂ. લુકમાન, આ. ૬)

તર્જુમા : ઓર કુછ લોગ ખેલ કી બાત ખરીદતે હેં કે અલ્લાહ કી રાહ સે બહકા દેં બે સમઝ ઓર ઉસે હંસી બના લે.

-(કન્ઝુલ ઈમાન)

યહ લહવલ હદીથ ક્યા હે ? જબ મો'મિન અલ્લાહ કે ઘર કી તરફ બળહતે હેં તો રાસ્તે કે અંદર ગાને બાજેવાલે બેઠ જાતે થે, તા કે દીવાનેં મસ્જિદ કી તરફ ન જાએ. અબ જબ કે ઘર ઘર ટી.વી. આ ચૂકા હે, ઘર ઘર પિક્ચર આ ચૂકે હેં તો બતાઓ ! દિલ કહાં સે નેકીયોં કી તરફ માઈલ હોગા ?! દિલ કહાં સે અલ્લાહ રબ્બુલ ઈઝ્ઝત કી મહબ્બત કી તરફ બળહેગા ?! આજસે તુમ કોશિશ કરો, તુમ્હારા ડ્રોઈંગ રૂમ (Drawing Room) હો, તુમ્હારા બેડ રૂમ (Bed Room) હો, કહીં ભી તુમ રહો, યાહે તુમ્હારી ઓફિસ હો, અબ વહાં ન કોઈ ગાને કી કેસેટ હોગી ન વહાં પર કોઈ ફિલ્મી મેગેઝીન હોગી. બલકે જહાં

देषो वडां दीनो हुन्या की ता'लीम और मुस्तफ़ा प्यारे صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم की नअतों की केसेटें, तिलावते कुर्आन मुकदस की केसेटें, उल्माअे अेडले सुन्नत के भयानात की केसेटें छों. तुम जब गाणी लेकर निकलो तो तुम्हारी गाणीयों के अंदर म्युजिक की आवाज न डो बल्के अल्लाह के जिक की आवाज आ रही डो. कोशिश करो ! यड ईन्कलाब लानेकी जरूरत डे. और में यकीन के साथ कडता डूं कल भी मुसलमान मादी ताकतों से लेस नहीं था लेकिन उसके भावजूद कामयाबीने बण्ड कर के उसका ईस्तेकबाल किया डे. ईस्लाम की पडली जंग का जार्डन लो, जंगे बहर के मौका पर तीनसो तेरड सडाभा में से सिर्फ नव सडाभा के पास तल्वारें थीं और बाकी के डार्थों में लकणियां थीं.

वो तीनसो तेरह थे तो लरजता था जमाना
आज हम डरणों हैं तो डरते हैं गुलामी

क्या यीज थी उनके पास ?! मडबबते रसूल की कुव्वत थी, ईशके मुस्तफ़ा की दौलत थी. आका जो कडते थे उस पर अमल करते थे. आका जिससे रोक डेते थे रुक जाते थे. ईस अजूम की बुन्याद पर मौला उन्हें डर कामयाबी से डम कनार करता था. डमें जुल्म करने के लिअे पैदा नहीं किया गया. जैसा के मुजसे पेशतर डजरत अल्लामा मुफ़ती अब्दुल गनी साडब رحمۃ اللہ علیہ ने कित्नी प्यारी बातें बताई के कुत्ते पर मडरबानी करो तो जन्नत के डककदार बन जाओगे ! जिस दीन के माननेवाले यड पयगाम डे रडो डों, तो बताओ ! डमारा मजडब डमें टेररिस्ट की ता'लीम कब डेता डे ? डमें यड ता'लीम नहीं दी गई, डमें यड नहीं कडा गया के जुल्म करो, लेकिन ! यड जरूर

कडा गया डे के अपना डेफ़ाअ करो, आज अेक छोटो बरया जिसे कोई तमाया मार डे तो व भी कुछ डाय पैर यलाता डे. अगर डिफ़ाअ को तुम टेररिस्ट का नाम डे रडे डो तो यड जुर्म डोगा. याद रभो ! जरूरत डे के तुम सोसायटी के अंदर अमन के माडोलको काईम करो, तुम पणोसियों के डकूक का भयाल करो, तुम अल्लाह और उसके रसूल की ईताअत करो, तुम्हारी जत दूसरों के लिअे रडमत डो जडमत न डो.

भेरे सरकार ने काफ़िरोसे भी डुस्ने सुलूक की ता'लीम दी डे. केसी ता'लीम दी डे ? किस तरड दी डे ? अगर मुशाडिदा करना याडतो डो तो डेषो, जब भी अल्लाह के कोई बरगुजीदा और इर्माबरदार बंदे ईस्लाम की बागडोर अपने डायमें लिअे डें उनसे मुतअद्लिक कोई मिषाल नहीं पेश कर सकता के उनडों ने कभी किसी दूसरे दीन के माननेवाले पर जुल्म किये डों ?

यडी उमर इरक رضی اللہ عنہ डें दरभत के साअेमें सो रडे डें, अेक सईर पडोंयता डे और पूछता डे, कडं डे अभीरुल मो'मिनन ! लोगोंने कडा, डेष ईघर जंगल के अंदर कडीं बकरियां यराते डोंगे ! वो गया मिलने के लिअे, रास्ते में फिर लोगों से पूछा, कडं डे अभीरुल मो'मिनीन ?! जवाब मिला, वो डेषो दरभत के साअेमें जो सो रडे डें वडी डे डमारे अमुरुल मो'मिनीन ! जब उसने डेषा के इरक के आ'जम رضی اللہ عنہ मडवे ज्वाब डे, सोया ईससे सुनेडरा मोका फिर कब मिलेगा ? तल्वार निकालता डे और अभीरुल मो'मिनीन को शडीद करना डी याडता डे के आपकी आंभ जुल गई ! किसकी आंभ जुली ? जिसने अपनी निगाडों से मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم के जल्वे डेषे थे.

★ हिक्मतते नमाज ★

आंभ जुली तो वो तांभ न ला सका और तल्वार उसके हाथसे गिर गई ! झड़के आ'जमने इर्माया, क्यों आये थे आप ?! कडा, मैं सहीर हूँ. आया था मुलाकात के लिये मगर तन्हा देभकर सोया काम तमाम कर हूँ, इस लिये के आप के नामका भौंफ़ पूरी हुन्या के अंदर है.

अमीरुल मो'मिनीन झड़के आ'जम رضي الله عنه ईशाह इर्माते हैं :-

क्या इस नापाक ईराहे से तुम आये थे ? उसने कडा, हां ! अब वो अर्ज करता है, अमीरुल मो'मिनीन ! मुझे यह बताईये के हमारे बाहशाहों को नरम गद्वे पर नींद नहीं आती, सिक्यूरिटी फ़ोर्स के दरमियान रहते हूँ नींद नहीं आती और आप जैसे ही दरभत के साअेमें सो रहे हैं ?! क्या आप को डर नहीं लगता ?!

सुनो ! आपने क्या जवाब दिया, ईशाह इर्माते हैं, जो ईन्सानों पर हुकूमत करता है वो डरा करता है और जो ईन्सानों की भिदमत करता है वो भेभौंफ़ रडा करता है. मैं डाकिम नहीं हूँ, मैं तो भादिम बन कर के आया हूँ.

और यही अमीरुल मो'मिनीन इर्माते हैं : अगर मेरे दौरे हुकूमत में अक बकरी ली भारिश की भीमारी से मर गई तो मैं डरता हूँ के अपने मौला की बारगाड में उसका क्या जवाब हूँगा ?!

याह रभो ! तुम्हारी जात किसी कमजोर के लिये जडमत न हो, बल्के सबके लिये तुम रडमत बन जाओ. काफ़िरों के साथ अख़ा सुलूक करो, उन्हे अख़ाईयों की भातें बताओ,

★ हिक्मतते नमाज ★

तुम अपनी जिंदगी को सीधे रास्ते पर चलाओ. रसूले आ'जम صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم के किरदार को अपनाओ ! अगर तुम जा रहे हो और कोई बुण्डी काफ़िर औरत हाथों में कुछ वजन लेकर के जा रही है तो तुम उसकी पेशानी के टीके को मत देभना, बल्के उसकी उम्र को देभकर उसके हाथों से भोज उठा लेना और अपने नबी की ता'लीम पर अमल कर के हुन्यावालों को बता देना के हमारे हुजूर صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ने हमें यह ता'लीम अता इर्माई है !

बहुत जरूरी है के हम पहले अपने से शुद्ध करें, ईन्शाअल्लाह ! देभते देभते हर मुसलमान अपने ईस्लामी रंगमें नजर आयेगा यहां तक के गैर ली दामने ईस्लाम से वाबस्त होते जायेंगे. अल्लाह तआलासे हुआ है के हम सब को अपने प्यारे उभीब صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم के उस्वअे उसना पर अमल करने की तौफ़ीक अता इर्माये. (आमीन)

وما علينا الا البلاغ المبين

किताब मंगवावो

किताब : ईमाम अहमद रजा और अहतमामे नमाज
लेभक : उजरत हाफ़िओ कारी मौलाना शाकिर रजवी नूरी (अमीरे सुन्नी दा'वते ईस्लामी-मुंभई)
प्रकाशक : सुन्नी दा'वते ईस्लामी-दयादरा शाभा
सरनामु : C/o. इयूजाने रजा मंजिल, मु. पो. दयादरा, ता. जि. लखन्य, पिन : 322020 (गुजरात)
 फ़ोन : (02642) 222411, 222922,
हदिथो : रु. 4/- [पोस्ट भर्थ रु. 1]